International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-7, Issue-6 December- 2020
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

# मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में स्त्री चेतना का अध्ययन

**Swati**
Ph.D. Scholar
Department of Hindi
Malwanchal University Indore, (M.P.).

**DR. Shobha Ratudi**
Supervisor
Department of Hindi
Malwanchal University Indore, (M.P.).

## सार

मन्नू भण्डारी ने परिवार और समाज में महिलाओं की सामाजिक और सांस्कृतिक तस्वीर को एक अलग आयाम प्रदान करने में योगदान दिया है। ये भेदभावपूर्ण सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्य, दृष्टिकोण और प्रथाएं जो महिला मानस के व्यक्तित्व को पंगु बना देती हैं, उनकी कहानियों में प्रकाश डाला गया है। यहां मैं भंडारी की दो कहानियों 'साजा' (वाक्य) और 'एक कामजोर लड़की की कहानी' पर चर्चा करना चाहता हूं।

साजा एक संवेदनशील युवा लड़की आशा की कहानी है, जो अपने सामने आने वाली कठोर परिस्थितियों के कारण उम्र से पहले परिपक्व हो जाती है। यहां भंडारी ने मूल निवासी और अर्जित विचारों के साथ–साथ शिक्षा के बाद की समस्या के बीच सामंजस्य स्थापित करने के अपने प्रयासों की भी पड़ताल की। आशा के पिता को बीस हजार रुपये के गबन के लिए सजा सुनाई जानी थी जो वास्तव में किसी और ने की थी। उसे उसकी नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया है और उसके आशा के मामा ने, जो अभी–अभी इंग्लैंड से लौटा है, उसके पिता को बचाने की सारी जिम्मेदारी ली। आशा और उसकी माँ समाज के अन्याय की खामोश पीड़ित हैं जबकि आशा की चाची (चाचा की पत्नी) को साहसिक और प्रवीण रूप में चित्रित किया गया है। भण्डारी अक्सर अपने नायक को या तो किए गए अन्याय से अनजान रखती है या उसके प्रति पूरी तरह चुप रहती है। यह साबित करने के लिए कि इस तरह की असमानताओं को कायम रखने वाले समाज में बचपन से ही उनका पालन–पोषण हुआ है। यह एक सच्चाई है कि आज भी एक महिला को बचपन से ही अपने लिंग के प्रति पूरी तरह जागरूक किया गया है।

**मुख्य शब्दः–** समाज, सामाजिक और सांस्कृतिक।

## प्रस्तावना

हिंदी लेखकों में मन्नू भण्डारी का योगदान सर्वाधिक प्रशंसनीय है। उनके स्त्री चरित्रों में भिन्नता है। उनमें से कुछ को पारंपरिक रूप से सौंपी गई भूमिका से ऊपर उठाया जाता है जबकि अन्य मूक पीड़ितों की रूढ़िवादी छवि से चिपके रहते हैं। मन्नू भण्डारी ने अपनी लघु कथा में समाज के बारे में अपने सूक्ष्म अवलोकनों को सफलतापूर्वक चित्रित किया है। अनीता माइल्स यहाँ ठीक ही कहती हैं, "एक लिंग–पक्षपाती समाज के सदस्य के रूप में एक महिला के जीवन के अनुभव उसके मानस को तैयार करते हैं। इसके अलावा, वह अपनी व्यक्तिगत परिस्थितियों, उम्र, वर्ग, प्रजाति आदि से संबंधित समाज की अपेक्षाओं जैसे कुछ अन्य कारकों से बंधी हुई है। इस प्रकार प्रत्येक महिला के जीवन का अनुभव अलग है और इसलिए, अद्वितीय है। भारत में महिलाओं के उत्थान के लिए उत्तर–औपनिवेशिक काल के दौरान विभिन्न प्रयास किए गए। बाद में 56/1955 ई. में हिंदू संहिता को दर किनार करते हुए, परिवार में पुरुषों और महिलाओं के अधिकारों की पूर्ण समानता हासिल की गई, और यह उम्मीद की गई कि कानून की सभी खामियों को कानून की अदालतों में दूर किया जाएगा। तब से, कम से कम कागजों पर महिलाओं के पक्ष में कानूनी स्थिति बदल दी गई है। कानून के अलावा, महिलाओं को साहित्य में प्रतिनिधित्व मिलने लगा। हाल के वर्षों में, महिला लेखकों का एक समूह इस परिदृश्य पर उभरा है, जो कथा साहित्य में महिलाओं की रूढ़िवादिता से दूर एक शैली में खुद का प्रतिनिधित्व करने के स्व–लगाए गए कार्य के साथ लिखती हैं, जो परंपरा–बद्धता के प्रति उनके स्पष्ट उद्देश्य वैज्ञानिक दृष्टिकोण का परिणाम था। भारतीय सामाजिक संरचना सभ्यता के विकास और आधुनिकीकरण के आगमन के साथ, ''देवी'' के रूप में महिला की अवधारणा बदलने लगी। उसने पुरुष के बराबर की भूमिका निभानी शुरू कर दी लेकिन दुर्भाग्य से, इसने समाज में उसकी स्थिति को और अधिक जटिल बना दिया जो वास्तव में उसकी साहसिक छवि को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है।

## मन्नू भण्डारी के व्यक्तित्व और कृतित्व

**मन्नू भण्डारी की प्रमुख कृतियाँ प्रस्तुत हैं** :

### 1. स्वामी

'स्वामी' मन्नू भण्डारी का भावप्रवण विचारोत्तेजक उपन्यास है। आत्मीय रिश्तो के बीच जिस सघन अंतर्द्वन्द का चित्रण करने के लिए मन्नू भण्डारी सुपरिचित है, उसका उत्कृष्ट रूप 'स्वामी' में देखा जा सकता है। सुदामिनी, नरेन्द्र और घनश्याम के त्रिकोण में उपन्यास की कथा विकसित हुई है। कथारस के साथ उपन्यास में स्थान पर ऐसे प्रश्न उठाए गए हैं जिनकी वर्तमान में प्रासंगिकता स्वयंसिद्ध है। जैसे, 'जिसे आत्म कहते हैं वह क्या औरतों की देह में नहीं है? उनकी क्या स्वतंत्र सत्ता नहीं है? वे क्या सिर्फ आई थीं मर्दों की सेवा करने वाली नौकरानी बनाने के लिए? सुदामिनी के जीवन में अथवा इस वृतान्त में 'स्वामी' शब्द की सार्थकता क्या है

### 2. आपका बंटी

आपका बंटी मन्नू भण्डारी के उन बेजोड़ उपन्यासों में है जिनके बिना न बीसवीं शताब्दी के हिन्दी उपन्यास की बात की जा सकती है न स्त्री–विमर्श को सही धरातल पर समझा जा सकता है। तीस वर्ष पहले (1970 में) लिखा गया यह उपन्यास हिन्दी की लोकप्रिय पुस्तकों की पहली पंक्ति में है। दर्जनों संस्करण और अनुवादों का यह सिलसिला आज भी वैसा ही है जैसा धर्मयुग में पहली बार धारावाहिक के रूप से प्रकाशन के दौरान था।

### 3. महाभोज

मन्नू भण्डारी का महाभोज उपन्यास इस धारणा को तोड़ता है कि महिलाएं या तो घर–परिवार के बारे में लिखती हैं, या अपनी भावनाओं की दुनिया में ही जीती–मरती हैं। महाभोज विद्रोह का राजनैतिक उपन्यास है। जनतंत्र में साधारण जन की जगह कहाँ है? राजनीति और नौकरशाही के सूत्रधारों ने सारे ताने–बाने को इस तरह उलझा दिया है कि वह जनता को फांसने और घोटाले का जाल बनकर रह गया है। इस जाल की हर कड़ी महाभोज के दा साहब की उँगलियों के इशारों पर सिमटती और कहती है।

### 4. मैं हार गई

मैं हार गई इस संग्रह की कहानियाँ मानवीय अनुभूति के धरातल पर रची गई ऐसी रचनाएँ हैं जिनके पात्र वायवीय दुनिया से परे, संवेदनाओं और अनुभव की ठोस तथा प्रामाणिक भूमि पर अपने सपने रचते हैं और ये सपने परिस्थितियों, परिवेश और अन्याय की परम्पराओं के दबाव के सामने कभी–कभी थकते और निराश होते भले ही दिखते हों, लेकिन टूटते कभी नहीं पुन–पुन जी उठते हैं। इस संग्रह में सम्मिलित कहानियों में कुछ प्रमुख हैंः ईसा के घर इन्सान, गीत का चुम्बन, एक कमजोर लड़की की कहानी, सयानी बुआ, दो कलाकार और मैं हार गई।

### 5. त्रिशंकु

एक निश्चित कालखंड की कहानियों का प्रतिनिधित्व करती 'त्रिशंकु' की इन कहानियों के पात्र जीवन के सिमटते–फैलते दायरों में सम्बन्धों के नकार और नए सिरे से अपने–अपने व्यक्तित्वों को स्वीकारने की ऊहापोह में जीते हैं। इन कहानियों में स्त्री–पुरुष सम्बन्धों के बनने–बिगड़ने की तफसीलें ही नहीं, मध्यवर्गीय समाज के मनोलोक की जटिलताएँ भी हैं। स्त्री–पुरुष सम्बन्धों के विविध पक्षों के साथ इस संग्रह की कहानियों में समयसापेक्ष पारदर्शिता है। सम्बन्धों को ढोते रहने की थकान और प्रेम की प्रवाहमान ऊष्मा है। 'त्रिशंकु', 'आते–जाते यायावर' और 'दरार भरने की दरार' जैसी चर्चित कहानियाँ नारी–पुरुष सम्बन्धों को कई कोणों से परिभाषित करती हैं। सहज कथा–विन्यास और शिल्प के संयोजन की दृष्टि से 'त्रिशंकु' की कहानियों का हिंदी कथा साहित्य में स्थायी महत्त्व है।

## मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में स्त्री चेतना

हिंदी कहानी के लिए साठ का दशक विशेष महत्त्व रखता है,क्योंकि इस दशक के अंतिम वर्षों में महिला कथाकारों का निर्णायक लेखन सामने आता है। शिवानी, मन्नू भण्डारी , कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, राजी सेठ, प्रभा खेतान आदि ने स्त्री संघर्ष की अनगिनत छवियों को न केवल ईमानदारी से अपने कथा साहित्य में चित्रित किया बल्कि उनके अंदर के प्रतिरोध को सही स्वर भी दिया। मन्नू भण्डारी का कथासाहित्य अन्य की अपेक्षा अधिक चर्चित और लोकप्रिय हुआ। मन्नू भण्डारी का

जीवन स्वयं कई तरह के विरोधाभासों और अंतर्विरोधों से गुजरा यही कारण है कि स्त्री जीवन का यथार्थ उनके साहित्य में अधिक मुखर रूप से सामने आया है। "यही सच है' मन्नू भण्डारी की सबसे त्रोकप्रिय कहानी है जिस पर 'रजनीगंधा' नाम से फिल्म भी बनी और सफल भी हुई। घर की चार–दीवारी से बाहर निकलकर मानसिक, शारीरिक और सामाजिक रूप से मुक्त दो पुरुषों के प्रेम में डूबी स्त्री मन की आंतरिक उहा–पोह को अभिव्यक्त करती यह कहानी स्त्री मनोविज्ञान को पहली बार बारीकी से सामने लाती है। "यही सच है' कहानी में स्त्री के लिए बनाई गई सामाजिक नैतिकता और संस्कार को टूटते हुए दिखाया गया है।

आधुनिक गद्य विधा की प्रमुख कहानीकार मन्नू भण्डारी का रचना संसार स्त्री विमर्श का पैरोकार है। उनकी कहानियाँ स्त्री अस्मिता को नई ऊँचाई तक ले जाने में सफल हैं। उनकी कहानियाँ आधुनिक जीवन शैली से उपजी त्रासदी, अवसाद, संबंधों की टूटन, विवाहेतर प्रेम संबंध आदि को चित्रित करने में सफल हैं। मुक्त होती स्त्री की वैचारिक उड़ान और आर्थिक रूप से सम्पन्न होने की इच्छा से बिखरती विवाह संस्था की अभिव्यक्ति 'आपका बंटी' में मार्मिकता से अभिव्यक्त हुई है। मध्यवर्ग की सामाजिक, आर्थिक विसंगति पर प्रहार करता उनका उपन्यास महाभोज' अपनी सघन अनुभूति के कारण न केवल उपन्यास के रूप में चर्चित हुआ बल्कि उसके नाट्य रूपान्तरण को भी बहुत पसंद किया गया। आजाद भारत में स्त्रियों के लिए जो सामाजिक आंदोलन हुए उससे महिला अधिकारों और अस्मिता को गति मिली जिसकी छाप हिंदी कहानियों पर भी दिखाई देती है। साठ के दशक में महिला कथाकारों ने स्त्री देह, मन, विचार को सामाजिक बंधनों से मुक्त कर स्त्रियों को अपने लिए स्वतंत्र जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त किया। लैंगिक समानता के अधिकार को उठाते हुए और खुद को भी पुरुषों के बराबर खड़ा करने की लड़ाई लड़ी। मन्नू भण्डारी की अधिकतर कहानियाँ और उपन्यास स्त्री त्रासदी की अंतर्कथा हैं। आर्थिक रूप से सम्पन्न स्त्री जैसे ही अपने जीवन को सामाजिक और पारिवारिक बंधन से मुक्त करने की कोशिश करती है उसका संघर्ष बढ़ जाता है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था स्त्री को उड़ान भरने से पहले ही उसके पर काट देती है। मन्नू भण्डारी इस व्यवस्था के सामने तन कर खड़ी हो जाती हैं। उन्हें किसी भी प्रकार का डर नहीं है। अगर हम यह मान लें कि स्त्री विमर्श भोगे हुए यथार्थ से उपजा है तो मन्नू भण्डारी का कथासाहित्य और प्रासंगिक और

यथार्थवादी साबित हो जाता है क्योंकि लोकप्रिय कथाकार राजेन्द्र यादव से उन्होंने तब विवाह किया जब वह बेरोजगार थे जबकि मन्नू भण्डारी नौकरी में थीं। स्त्रियों को लेकर राजेन्द्र यादव का जीवन विवादित रहा।

मन्नू भण्डारी की कहानियों में संबंधों की जो टूटन दिखायी देती है वह उनके जीवन से बहुत मिलती–जुलती है। एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, आँखों देखा झूठ, व्रिशंकु तथा यही सच है उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं। मन्नू भण्डारी की कहानियों में नगरीय जीवन जीवन–शैली का खूब चित्रण हुआ है। महानगरों ने स्त्रियों को आर्थिक रुप से मजबूत तो किया लेकिन उनकी महत्त्वाकांक्षाओं को भी बढ़ा दिया। महानगरीय जीवन की तमाम विडंबनाओं को प्रतिष्ठित साहित्यकार अनामिका इन शब्दों में अभिव्यक्त करती हैं– "निश्चित रूप से स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन तो आया है और यह परिवर्तन महानगरो और नगरों तक बहुत स्पष्ट रूप से देखा भी जा सकता है। लेकिन दूरदराज के गाँवो में आज भी स्त्रियों की दशा अच्छी नहीं है। आज स्त्री विमर्श के नाम पर नारेबाजी हो रही है कि देह की मुक्ति ही स्त्री की मुक्ति है। मैं यह नहीं मानती। मेरा मानना है कि सबसे बड़ा बंधन अगर स्त्रियों के लिए कोई है तो वह संस्कारों से मुक्ति का है। मैंने ऐसी स्त्रियों को देखा है जो आर्थिक रूप से स्वतंत्र हैं लेकिन कोई निर्णय नहीं ले पातीं, जो जरूरी है क्योंकि वह संस्कारों से जकड़ी हुई हैं, तो संस्कारों से मुक्ति ही स्त्री मुक्ति का पहला और अनिवार्य कदम है। 'यही सच है' महानगरों में रह रहे दो पुरुषों के प्रेम में फंसी स्त्री दीपा की कहानी है जिसके लिए अपना कैरियर और प्रेम दोनों महत्त्वपूर्ण है। 'यही सच है' की नायिका दीपा यह समझ चुकी है कि आर्थिक संपन्नता ही स्त्री जीवन का मजबूत आधार है इसलिए वह अपने वर्तमान के प्रेम का चुनाव करती है। भावना में बहकर अपने पूर्व प्रेमी को नहीं अपनाती।

दो पुरुषों के विकल्प होते हैं तो वह निर्णय लेने में समय लेती है। दीपा के साथ भी यही हो रहा है। दीपा कलकत्ता में अपनी मित्र इरा के पास पहुँचती है तो इरा की व्यस्तता के कारण निशीथ उसकी मदद करता है। वह अपने पूर्व प्रेमी निशीथ से मित्रती है। हालांकि वह जानती है कि निशीथ इसी शहर में है लेकिन उसका मिलना संयोग ही था। यह संजय भी जानता है कि निशीथ कलकत्ता में

है। इसका जिक्र कहानी के आरंभ में है। मन्नू भण्डारी मुश्किल को भी सहजता से प्रस्तुत करती हैं– यही उनकी विशेषता है। कहानी की एक घटना में इसे देखा जा सकता है। दीपा को कलकत्ता जाना है। कलकत्ता उसके लिए अनजान शहर है। वह संजय से चिंता व्यक्त करते हुए कहती है– ''पर कलकत्ता तो मेरे लिए एकदम नई जगह है। वहाँ इरा को छोड़कर मैं किसी को जानती भी नहीं। अब उन लोगों की कोई जान–पहचान हो तो बात दूसरी है'' संजय उसको छेड़ते हुए कहता है– ''और किसी को नहीं जानती?'' फिर मेरे चेहरे पर नजरें गड़ाकर पूछता है, ''निशीथ भी तो वहीं है?'' अब यहाँ अपने वर्तमान प्रेम के सामने स्त्री के स्वाभिमान को व्यक्त करना है। स्त्री के लिए सबसे ज्यादा मुश्किल यही होता है जब उसे अपने अतीत और वर्तमान दोनों के प्रेम से टकराना पड़ता है। लेकिन मन्नू भण्डारी की नायिकाएँ मजबूत होती हैं। भावुक होकर भी अपने भविष्य के प्रति सचेत होती हैं। दीपा, संजय को जवाब देते हुए कहती है– ''होगा, मुझे क्या करना है उससे?'' संजय फिर छेड़ता है– ''कुछ नहीं करना'' संजय के इतना कहते ही दीपा भड़क जाती है– ''देखो संजय, मैं हजार बार तुमसे कह चुकी हूँ कि उसे लेकर मुझसे मजाक मत किया करो! मुझे इस तरह का मजाक जरा भी पसंद नहीं है!'' स्त्री के साथ यही होता है। वह जब भावना में होती है तोया बहुत सहज हो जाती है या बहुत कठोर क्योंकि उसको बीच का रास्ता नहीं सूझता। दीपा के साथ ऐसा ही होता है।

निशीथ वहाँ जब दीपा से मित्रता है तो उससे वह दुबारा प्रेम करने लगती है। दीपा एक दिन जब इरा के साथ कॉफी पीने जाती है तो वहाँ निशीथ मित्रता है। जब वह लंबे समय के बाद निशीथ के साथ समय बिताती है तो उसे अपना पुराना प्यार याद आ जाता है। निशीथ की गतिविधियाँ बताती हैं कि शायद उसे अपने व्यवहार पर अफसोस है यही कारण है दीपा को निशीथ का प्रेम सच्चा लगते लगता है। उसे लगता है निशीथ ने जो किया उसे उसका पछतावा है इसलिए उसके अंदर सो चुका प्रेम फिर से जाग जाता है। अगर यह मान लिया जाए कि पहला प्रेम भूला नहीं जाता तो निशीथ के लिए उसके मन में जो भावनाएँ उभरती हैं वह अनायास नहीं हैं। बल्कि कहीं न कहीं वह निशीथ के साथ बिताए अपने व्यक्तिगत पल्नों को याद करके भावुक हो जाती है। उसकी इस मनःस्थिति का भावप्रवण चित्रण मन्नू भण्डारी ने किया है। चूंकि यह कहानी डायरी शैली में है इसलिए नायिका का सारा संवाद भी स्वयं से है। दीपा खुद डायरी में लिख अपने विवरण को व्यक्त कर रही है। मन्नू

भण्डारी ने बड़ी तन्मयता और विस्तार से दीपा और निशीथ के वर्षों बाद के मिलन को लिखा है, जिसे दीपा कह रही है–शाम को इरा मुझे कॉफी–हाउस ले जाती है। अचानक मुझे वहाँ निशीथ देता है। मैं सकपकाकर नजर घुमा लेती हूँ। पर वह हमारी मेज पर ही आ पहुँचता है।

## उपसंहार

एक स्त्री के 'अपने' व्यक्तित्व की आँच वे नहीं सँभाल पातीं, और पुरुष, जिसको परम्परा ने घर का रक्षक, घर का स्थपति नियुक्त किया है, वह उन पिघलती दीवारों के सामने पूरी तरह असहाय हो जाता यह समझ पाने में कतई अक्षम कि पत्नी की परिभाषित भूमिका से बाहर खिल और खुल रही इस स्त्री से क्या सम्बन्ध बने, कैसा व्यवहार किया जाए और यह सारा असमंजस, सारी दुविधा और असुरक्षा एक निराधार सन्देह के रूप में फूट पड़ती है। आत्म और परपीड़न का एक अनन्त दुश्चक्र, जिसमें घर की दीवारें अन्ततः भर जाती हैं। स्त्री–स्वातंत्रय के संक्रमण काल का यह नाटक खास तौर पर पुरुष को सम्बोधित है और उससे एक सतत सावधानी की माँग करता है कि बदलते हुए परिदृश्य से बौरा कर वह किसी विनाशकारी संभ्रम का शिकार न हो जाए, जैसे कि इस नाटक का 'अर्जित' होता है।

साहस और बेबाकबयानी के कारण मन्नू भण्डारी ने हिन्दी कथा–जगत् में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। नैतिक–अनैतिक से परे यथार्थ को निर्द्वन्द्व निगाहों से देखना उनके कथ्य और उनके कथन को हमेशा नया और आधुनिक बनाता है। मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है और त्रिशंकु संग्रहों की कहानियाँ उनकी सतत जागरूक, सक्रिय विकासशीलता को रेखांकित करती हैं। आलोचकों और पाठकों ने मन्नूजी की जिन विशेषताओं को स्वीकार किया है, वे हैं उनकी सीधी–साफ भाषा, शैली का सरल और आत्मीय अंदाज और कहानी के माध्यम से जीवन के किसी स्पन्दित क्षण को पकड़ना। कहना न होगा कि इस संग्रह में शामिल सभी कहानियाँ इन विशेषताओं का निर्वाह करती हैं। एक प्लेट सैलाब, बंद दराजों के साथ, सजा, नई नौकरी– ये सभी कहानियाँ अक्सर चर्चा में रही हैं और इनमें मन्नूजी की कला निश्चय ही एक नया मोड़ लेती है। जटिल और गहरी सच्चाइयों के साहसपूर्ण साक्षात्कार का प्रयत्न करती है।

## सन्दर्भ ग्रंथ


- वर्मा, रतनकुमारी, महिला साहित्यकारों का नारी चित्रण (हिन्दी कहानियों के संदर्भ में), अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स 4378/4, 105, जे. एम. डी. हाउस, मुरारी लाल स्ट्रीट, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली–11002, संस्करण : 2009
- नारी विमर्श दशा और दिशा, खान, एम. फिरोज (डॉ.) नियाब, शगुफ्ता (डॉ.)
- साहित्य और समय (अन्तः सम्बन्धों पर पुनर्विचार), बद्रीनारायण।
- महिला साहित्यकारों का नारी–चित्रण (हिन्दी कहानियों के संदर्भ में), वर्मा, (श्रीमती) रतन कुमारी (डॉ.),
- एक कहानी यह भी, मन्नू भण्डारी ,
- द सब्जेक्शन ऑफ विमैन, जॉन स्टुअर्ट मिल अनु. युगांक धीर।
- हंस, अगस्त 2010, सुधा अरोड़ा।
- एक कहानी यह भी, मन्नू भण्डारी ।
- वही,
- द सब्जेक्शन ऑफ विमैन, जॉन स्टुअर्ट मिल अनु. युगांक धीर।
- अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान, पृ. 175
- वही, पृ. 08
- वही, पृ. 12